Exchange & Finance Available
Zelo Electric Scooter
Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

22 अप्रैल 2026

वर्ष - 03, अंक - 51 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

कुरीतियों और विकृतियों को त्यागें तो श्रेष्ठ भारत का निर्माण संभव- भैया जी जोशी

नीमच में प्रमुख मातृशक्ति और प्रमुखजन वृहद गोष्ठी, संघ के पूर्व सह कार्यवाह ने सामाजिक बदलाव पर किया संवाद

नीमच। विदेशी या आयातित की अपेक्षा अब 'स्व' को केंद्र में रखकर आचरण का अभ्यास करना होगा। भारत को सही मायने में उच्च शिखर पर ले जाना है तो अपनाना होगा- मैं बदलूंगा तो युग बदलेगा। इसके लिए कुरीतियों, विकृतियों का त्याग करना नितांत आवश्यक है। यह विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व अखिल भारतीय सर संघ चालक श्री सुरेश भैया जी जोशी ने नीमच के टाउन हॉल में आयोजित प्रमुख मातृशक्ति और प्रमुखजन गोष्ठी को संबोधित करते हुए कही। प्रथम सत्र में भैया जी जोशी ने मातृशक्ति से संवाद किया। आपने महिलाओं से परिवार, सामाज, विभिन्न वर्गो, व्यवस्थाओं, आदिकाल की परंपराओं, रीतियों, कुरीतियों, रूढ़ियों और सुधार को लेकर विस्तृत चर्चा की। प्रबुद्ध महिलाओं ने विभिन्न बिंदुओं पर समाज मे समानता और सुधार की संभावनाओं पर विचार रखे। द्वितीय सत्र में प्रमुखजन गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें भारत की संस्कृति और सभ्यता को आगे बढ़ाने में अवरोध बन रही परिस्थितियों पर विस्तार से चर्चा की गई। समाज के विभिन्न वर्ग के प्रमुखजनों ने सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन और सुधार के लिए महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। पूर्व सर कार्यवाह भैया जी जोशी ने इन सत्रों में कहा कि भारत में हिंदू हैं लेकिन हिंदुत्व का अभाव दिखाई देता है। भारत मे रहकर भी भारतीय नहीं बन पा रहे हैं।

आज भी सामाजिक, जातिगत भेदभाव सबसे बड़ी चुनोती है। जन्म के आधार पर जब पृकृति ने कोई भेद नहीं किया तो हम ऊंच नीच, भेदभाव, स्पृश्य अस्पृश्यता जैसी कुप्रथाओं को क्यों ढो रहे हैं। आज तत्वज्ञान आचरण को जीवन और सिद्धांतों में लाने वाले हिंदुओ की आवश्यकता है। हिंदू की सही पहचान उसके जीवन मूल्यों से है। पुरातन काल की कुछ प्रथाएं आगे चलकर कुरीतियों और विकृति में बदल गई। उन्हें त्यागे बिना हम सुद्रढ़ राष्ट्र की कल्पना नहीं कर सकते। आधुनिकता को स्वीकार करें सदुपयोग करें लेकिन पाश्चात्य सभ्यता को जीवन का हिस्सा न बनने दें। पौराणिक काल मे नदियों, पेड़ पृकृति की पूजा की परंपरा रही, लेकिन अधिनिकता के दौर में हम इन्हें छोड़ते गए। दहेज प्रथा को आज भी चला रहे हैं। लड़की हमारी है तो यह अन्याय है और लड़का हमारा है तो यह परंपरा में ली गई। ऐसे ही ऊंच नीच का भेदभाव है। जबकि आज क्या उच्च जाति के घरों में निम्न मानसिकता के बच्चे पैदा नहीं होते क्या? यही नहीं कई निम्न परिवारों में उच्च मूल्यों वाली संतान पैदा होती है। भेदभाव को समाप्त किये बिना हम आगे बढ़ ही नहीं सकते। यानि जो छोड़ना था उन्हें अपनाए हुए हैं और जो अपनाना था उन्हें हम छोड़ क्यों रहे? अच्छी बातें पुस्तकों से नहीं अपितु माता पिता से मिलती है। पीढ़ी यदि संवरती है या बिगड़ती है तो दोष माता पिता का भी है। बच्चों को जो आवश्यक है वह देने वाले बनें न कि जो चाहिए वह दें। देशभक्ति केवल 15 अगस्त या 26 जनवरी को नहीं दिखाई देनी चाहिए। देशभक्ति का संबंध तो नित्य जीवन से है। भैया जी ने कहा कि दुनिया मे भारत की दुर्लभ परम्पराओं, संस्कृति, समाज और परिवार व्यवस्था का कोई सानी नहीं है। लेकिन इसे न केवल समझना होगा बल्कि जीवन मे अनुसरण भी दृढ़ता से करना होगा। तब हम विश्व के मार्गदर्शक बनने की स्थिति में होंगे। हम किसी की पराजय में विश्वास नहीं करते बल्कि उनको जीतने में हमारा विश्वास है। सनातन हिन्दू धर्म के मूल्यों को समझकर आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। हम हिन्दू होकर भी हिंदू नहीं बन पा रहे। स्वयं की भूमिका का निर्धारण कीजिये तब भारतको विश्वगुरू बनाने का सपना साकार होगा। दोनों ही सत्रों में विभिन्न वर्गों के प्रमुखजन और प्रमुख मातृशक्ति से भैया जी जोशी ने विस्तृत संवाद किया। आरंभ मां भारती के चित्र पर माल्यार्पण और प्रेरक गीत से हुआ। मातृशक्ति गोष्ठी का संचालन सुधा महावर ने किया तथा प्रमुखजन गोष्ठी का संचालन डॉ राजेंद्र ऐरन ने किया। मंच पर भैया जी जोशी के साथ विभाग कार्यवाह श्री सतीश खंडेलवाल, जिला कार्यवाह श्री अनिल जैन आसीन थे। कार्यक्रम में संघ के प्रांत, विभाग, जिला, नगर पदाधिकारी मौजूद रहे।

हाई-टेक सिस्टम से बदली अफीम जांच की तस्वीर, अब हेराफेरी नामुमकिन !

क्यूआर कोड, माइक्रो कोड और अत्याधुनिक मशीनों से पारदर्शी हुई प्रक्रिया : सांसद सुधीर गुप्ता के औचक निरीक्षण में खुली हकीकत

नीमच 20 अप्रैल (निप्र)। अफीम किसानों के लिए बड़ी राहत और भरोसे की खबर सामने आई है। अब अफीम की तौल और जांच प्रक्रिया पूरी तरह हाई-टेक, डिजिटल और पारदर्शी हो चुकी है, जिसमें किसी भी तरह की हेराफेरी की गुंजाइश लगभग खत्म हो गई है। क्षेत्रीय सांसद सुधीर गुप्ता ने अफीम फैक्ट्री का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का गहराई से जायजा लिया और मौके पर मौजूद अधिकारियों से पूरी प्रक्रिया को समझा। निरीक्षण के दौरान यह सामने आया कि पहले जहां अफीम जांच में पर्ची व्यवस्था और मानवीय हस्तक्षेप की वजह से शंकाएं बनी रहती थीं, वहीं अब पूरी प्रणाली को तकनीक के जरिए इतना मजबूत बना दिया गया है कि किसी भी स्तर पर गड़बड़ी करना बेहद मुश्किल हो गया है।

ऐसे हो रही है अब अफीम की जांच - फैक्ट्री में किसानों द्वारा लाई गई अफीम को सबसे पहले कंटेनरों में संग्रहित किया जाता है। हर कंटेनर पर पहले किसान का नाम दर्ज होता है, लेकिन प्रक्रिया शुरू होते ही उसे हटाकर एक क्यूआर कोड लगा दिया जाता है। इसके बाद जब सैंपल लैब में भेजा जाता है, तो उसे एक अलग माइक्रो कोड दिया जाता है। इस डबल कोडिंग सिस्टम का सबसे बड़ा फायदा यह है कि जांच करने वाले एक्सपर्ट को यह पता ही नहीं चलता कि वह किस किसान की अफीम का परीक्षण कर रहा है। यानी पूरी प्रक्रिया पूरी तरह ब्लाइंड टेस्टिंग सिस्टम पर आधारित हो चुकी है।

- **सीसीटीवी और लाइव मॉनिटरिंग**
- **पूरी फैक्ट्री हाई सिक्योरिटी निगरानी में काम कर रही है।**
- **हर कोने में सीसीटीवी कैमरे लगे हैं ।**
- **पूरी प्रक्रिया की वीडियोग्राफी रिकॉर्ड होती है ।**
- **डीएनसी (कोटा) और जीएम स्तर के अधिकारी दूर बैठकर भी निगरानी कर सकते हैं ।**
- **इससे पारदर्शिता और जवाबदेही दोनों सुनिश्चित हो गई हैं।**

नई मशीनें, सटीक जांच - सांसद ने लैब का निरीक्षण कर साफ किया कि अब वहां कोई पुरानी मशीन इस्तेमाल नहीं हो रही है। सभी मशीनें नई, अत्याधुनिक और एक ही प्रकार की हैं, जिससे जांच में किसी भी तरह का अंतर या पक्षपात संभव नहीं है।हर सैंपल का रिकॉर्ड डिजिटल रूप से दर्ज होता है — किस मशीन पर टेस्ट हुआ, कब हुआ और क्या परिणाम आया — सब कुछ सिस्टम में सुरक्षित रहता है ।

250+ कलर लाइब्रेरी और एक्सपर्ट टीम - अफीम की गुणवत्ता जांच के लिए अब एक मजबूत कलर लाइब्रेरी सिस्टम तैयार किया गया है, जिसमें 250 से अधिक सैंपल मौजूद हैं। देशभर से आए 20 से ज्यादा केमिकल एक्सपर्ट्स इस प्रक्रिया में शामिल हैं, जो आधुनिक तकनीक के जरिए सटीक मॉर्फिन कंटेंट का आकलन करते हैं।

1 लाख से ज्यादा किसानों को फायदा - देश में वर्तमान में 1 लाख से अधिक लाइसेंसी अफीम किसान हैं। पिछले कुछ वर्षों में करीब 90 हजार नए लाइसेंस भी जोड़े गए हैं। ऐसे में यह नई प्रणाली किसानों के भरोसे को मजबूत करने में अहम भूमिका निभा रही है।

किसी के साथ अन्याय ना हो - "हमारा प्रयास है कि किसी भी किसान के साथ अन्याय न हो। नई तकनीक के जरिए पूरी प्रक्रिया को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाया गया है। अगर किसी किसान को कोई शिकायत या सुझाव है, तो वह सीधे हमें या विभाग को बता सकता है।"

भ्रम फैलाने वालों पर निशाना - सांसद ने यह भी कहा कि कुछ लोग अफीम खेती को लेकर किसानों में भ्रम फैलाने की कोशिश करते हैं, लेकिन हकीकत यह है कि सरकार लगातार इस व्यवस्था को मजबूत और पारदर्शी बना रही है। स्पष्ट है कि क्यूआर कोडिंग, माइक्रो कोडिंग, डिजिटल ट्रैकिंग और हाई-टेक मशीनों के इस्तेमाल से अफीम जांच की पूरी प्रक्रिया अब आधुनिक और निष्पक्ष बन चुकी है।इस बदलाव से न केवल हेराफेरी पर रोक लगेगी, बल्कि किसानों का विश्वास भी पहले से कहीं ज्यादा मजबूत होगा।

भगवान परशुराम जयंती पर नीमच में निकली वाहन रैली

जनसैलाब उमड़ा, शहरवासियों ने पुष्प वर्षा कर किया स्वागत

नीमच । नीमच में सर्व ब्राह्मण समाज कल्याण समिति द्वारा भगवान परशुराम जयंती धूमधाम से मनाई गई। पंचवटी कॉलोनी स्थित परशुराम धाम में आयोजन हुए, जिनमें समाज के महिला-पुरुषों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। जयंती से एक दिन पूर्व भजन संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें समाजजनों ने देर रात तक भक्ति गीतों का आनंद लिया। रविवार को जयंती के मुख्य कार्यक्रम के तहत एक विशाल वाहन रैली निकाली गई। इसका शुभारंभ भगवान परशुराम की मूर्ति पर माल्यार्पण और पूजन के साथ हुआ। रैली में डीजे पर भक्तिमय भजन बज रहे थे, और श्रद्धालु केसरिया ध्वज लिए कतारबद्ध होकर चल रहे थे। एक विशेष रूप से सजाए गए रथ में भगवान परशुराम के स्वांगधारी और उनका चित्र स्थापित था, जिसके दर्शन के लिए मार्ग में भक्तों की भीड़ उमड़ी। परशुराम धाम के अध्यक्ष उमेश शर्मा ने बताया कि यह वाहन रैली शहर के प्रमुख मार्गों जैसे विजय टॉकीज चौराहा, भारत माता चौराहा, कमल चौक और फव्वारा चौक से गुजरी। पूरे मार्ग में शहरवासियों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर रैली का भव्य स्वागत किया।

रैली के समापन के बाद परशुराम धाम में भगवान की महाआरती की गई। इसके उपरांत एक धर्मसभा का आयोजन हुआ, जिसमें वक्ताओं ने समाज की एकजुटता पर जोर दिया। कार्यक्रम का समापन महाप्रसाद वितरण के साथ हुआ।

एम.पी. बोर्ड परीक्षा में आदित्य बिड़ला हायर सेकेंडरी स्कूल का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत, विद्यार्थियों ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

Abhishek Class 10, I Position

Shivani prasad Class 10, II Position

Ajit Singh Class 10, III Position

Bherulal Dhakad Class 12, I Position

Anjall Dhakad Class 12, II Position

Kavita Gayari Class 12, III Position

खोर । विक्रम नगर, खोर स्थित आदित्य बिड़ला हायर सेकेंडरी स्कूल ने हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी परीक्षाओं में शत-प्रतिशत परिणाम प्राप्त कर एक बार फिर उत्कृष्टता का परिचय दिया है। विद्यालय के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए उच्च अंक हासिल किए।

कक्षा 12वीं में भेरुलाल धाकड़ ने 92% अंक प्राप्त कर प्रथम, कुमारी अंजली धाकड़ ने 90.40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय एवं कविता गायरी ने 87% अंक प्राप्त कर विद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार कक्षा 10वीं (हाई स्कूल) परीक्षा में अभिषेक ने 94.2% अंक प्राप्त कर प्रथम, शिवानी प्रसाद ने 93.8% अंक प्राप्त कर द्वितीय एवं अजीत सिंह ने 93.4% अंक प्राप्त कर विद्यालय में तृतीय स्थान हासिल किया।

विद्यालय प्रबंधन, प्राचार्या एवं शिक्षकों ने बोर्ड परीक्षा परिणाम में विद्यार्थियों कि इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। प्राचार्य सुश्री रिंकू बनर्जी ने विद्यार्थियों की इस उत्कृष्ट उपलब्धि का श्रेय प्रबंधन के सकारात्मक सहयोग, एवं विद्यालय की नवाचारपूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों को दिया है।

जय श्री परशुरामजी के जयकारों से गूंजा शहर, सकल ब्राह्मण समाज ने निकाली भव्य शोभायात्रा

नीमच। सकल ब्राह्मण समाज द्वारा भगवान परशुराम जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में शहर में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। इस दौरान पूरा मार्ग 'जय परशुराम' के जयघोष से गुंजायमान रहा। शोभायात्रा में ब्राह्मण समाज की महिलाओं, युवतियों, पुरुषों और बच्चों ने पारंपरिक परिधानों में बड़ी संख्या में सम्मिलित होकर आयोजन को भव्यता प्रदान की। भगवान परशुराम जी के चित्र के सम्मुख पूजन-अर्चन के साथ शुरू हुई यह शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्गों से गुजरी, जहाँ समाजजनों का उत्साह देखते ही बनता था। जगह-जगह मंचों से पुष्पवर्षा कर यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। शोभायात्रा का समापन रतनदेवी मांगलिक भवन पर हुआ। यहाँ आयोजित मिलन समारोह में वक्ताओं ने भगवान परशुराम जी के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में सभी समाजजनों ने सामूहिक स्नेह भोज ग्रहण किया। इस अवसर पर समाज की एकजुटता और संगठन शक्ति का अनुपम उदाहरण देखने को मिला।

Email: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 8770664886

राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों के विधानसभा चुनाव 2026

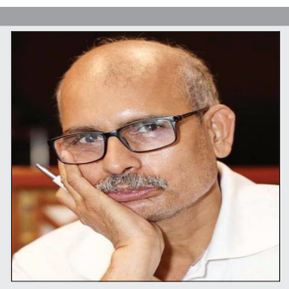

विनोद कुमार सिंह

निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आधिकारिक आंकड़ों ने इस लोकतांत्रिक उत्सव को और अधिक अर्थपूर्ण बना दिया है। असम में लगभग 85 प्रतिशत से अधिक मतदान, केरल में लगभग 78 प्रतिशत और पुडुचेरी में लगभग 90 प्रतिशत के आसपास रिकॉर्ड मतदान यह स्पष्ट संकेत देता है कि भारत का मतदाता अब केवल दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय और निर्णायक भागीदार बन चुका है। यह आंकड़े केवल प्रतिशत नहीं हैं, बल्कि लोकतंत्र के प्रति जनता के विश्वास,उसकी प्रतिबद्धता और उसकी आकांक्षाओं का जीवंत प्रमाण हैं।

प्रथम चरण का मतदान मेंजनमत की गूंज,लोकतंत्र का आत्मविश्वास और बदलते राजनीतिक संकेत...

हमारा लोकतंत्र केवल एक संवैधानिक व्यवस्था नहीं,बल्कि जनचेतना की वह जीवंत धारा है , जो समय-समय पर अपने स्वरूप, अपने तेवर और अपनी दिशा को स्वयं निर्धारित करती है।वर्ष 2026 के विधानसभा चुनावों का प्रथम चरण - असम,केरल और केन्द्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में सम्पन्न मतदान - इसी लोकतांत्रिक चेतना का प्रखर और व्यापक प्रतिबिंब बनकर सामने आया है।यह चरण केवल मतपेटियों तक सीमित एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं,बल्कि जनमत की वह गूंज है जिसमें सामाजिक परिवर्तन की आहट, राजनीतिक पुनसंर्तुलन की छाया और भविष्य की राजनीति की स्पष्ट रूपरेखा सुनाई देती है।

निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आधिकारिक आंकड़ों ने इस लोकतांत्रिक उत्सव को और अधिक अर्थपूर्ण बना दिया है। असम में लगभग 85 प्रतिशत से अधिक मतदान, केरल में लगभग 78 प्रतिशत और पुडुचेरी में लगभग 90 प्रतिशत के आसपास रिकॉर्ड मतदान यह स्पष्ट संकेत देता है कि भारत का मतदाता अब केवल दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय और निर्णायक भागीदार बन चुका है। यह आंकड़े केवल प्रतिशत नहीं हैं, बल्कि लोकतंत्र के प्रति जनता के विश्वास,उसकी प्रतिबद्धता और उसकी आकांक्षाओं का जीवंत प्रमाण हैं।

असम में उच्च मतदान यह संकेत देता है कि वहां चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं, बल्कि जनसरोकारों की अभिव्यक्ति का मंच बन चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर शहरी इलाकों तक जिस प्रकार मतदाताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, वह इस बात का द्योतक है कि मतदाता अब अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग और सचेत है।यह उत्साह जहां एक ओर सत्तारूढ़ दल के लिए चुनौती का संकेत देता है, वहीं दूसरी ओर यह भी दशार्ता है कि यदि सरकार ने अपने कार्यों से जनविश्वास अर्जित किया है,तो उसे पुनः अवसर भी मिल सकता है।

केरल का मतदान प्रतिशत अपनी प्रकृति में भले ही संतुलित प्रतीत होता हो, लेकिन उसकी गहराई में एक परिपक्व लोकतांत्रिक चेतना का प्रवाह दिखाई देता है।यहाँ का मतदाता परंपरागत रूप से विचारधारा आधारित मतदान करता है और यही कारण है कि मतदान का प्रतिशत स्थिर रहते हुए भी अत्यंत महत्वपूर्ण संकेत देता है। लगभग 78 प्रतिशत मतदान यह बताता है कि केरल में लोकतंत्र केवल एक प्रक्रिया नहीं,बल्कि एक वैचारिक अभ्यास है,जिसमें हर मतदाता अपने निर्णय को एक जिम्मेदारी के रूप में देखता है।

पुडुचेरी में लगभग 90 प्रतिशत के आसपास मतदान ने यह सिद्ध कर दिया है कि लोकतंत्र का उत्साह क्षेत्रफल या जनसंख्या पर निर्भर नहीं करता,बल्कि जनभागीदारी की भावना पर आधारित होता है। छोटे से केन्द्र शासित प्रदेश में इतनी बड़ी संख्या में मतदाताओं का मतदान करना यह दशार्ता है कि लोकतंत्र की जड़ें कितनी गहरी और मजबूत हैं। यह मतदान न केवल राजनीतिक दलों के लिए संदेश है, बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणा भी है कि लोकतंत्र की असली शक्ति जनता की सक्रिय भागीदारी में निहित है।

इस प्रथम चरण का एक और महत्वपूर्ण पक्ष मतदाता संरचना में हो रहा परिवर्तन है।लगभग 5.3 करोड़ से अधिक मतदाताओं की भागीदारी यह दशार्ती है कि लोकतंत्र अब केवल संख्याओं का खेल नहीं, वरन विविधता और समावेश का उत्सव बन चुका है। महिला मतदाताओं की बढ़ती संख्या और उनकी सक्रिय भागीदारी इस परिवर्तन का सबसे सशक्त संकेत है।केरल और पुडुचेरी जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या पुरुषों के बराबर या उससे अधिक होना केवल एक सांख्यिकीय तथ्य नहीं,बल्कि एक सामाजिक क्रांति का संकेत है।

महिलाएं अब केवल मतदान करने वाली इकाई नहीं,बल्कि नीति निर्धारण को प्रभावित करने वाली शक्ति बन चुकी हैं।उनके मुद्दे अब चुनावी विमर्श के केंद्र में हैं - चाहे वह महंगाई हो, स्वास्थ्य सेवाएं हों, शिक्षा हो या सुरक्षा।राजनीतिक दलों ने भी इस परिवर्तन को स्वीकार करते हुए अपनी रणनीतियों में बदलाव किया है और महिला मतदाताओं को ध्यान में रखकर योजनाएं और घोषणाएं प्रस्तुत की हैं।यह स्पष्ट है कि आने वाले समय में महिला मतदाता भारतीय राजनीति की दिशा तय करने में निर्णायक भूमिका निभाएंगी।

युवा मतदाताओं की भागीदारी इस चुनाव की आत्मा है।लाखों नए मतदाताओं का पहली बार मतदान करना यह दशार्ता है कि भारत का भविष्य अब मतदान केंद्रों तक पहुंच चुका है। यह युवा वर्ग पारंपरिक राजनीति से अलग सोच रखता है।उसके लिए जातीय या धार्मिक समीकरणों की अपेक्षा रोजगार, शिक्षा, डिजिटल अवसर और वैश्विक प्रतिस्पर्धा अधिक महत्वपूर्ण हैं।वह केवल वादों से प्रभावित नहीं होता,बल्कि परिणाम चाहता है,पारदर्शिता चाहता है और अवसर चाहता है। यही कारण है कि आज की राजनीति में युवाओं की भूमिका केवल सहायक नहीं, बल्कि निर्णायक बन चुकी है।

पुरुष मतदाताओं की भूमिका अब भी महत्वपूर्ण है,लेकिन महिला और युवा मतदाताओं के उभार ने चुनावी समीकरणों को अधिक संतुलित और प्रतिस्पर्धी बना दिया है।यह परिवर्तन लोकतंत्र के लिए सकारात्मक संकेत है,क्योंकि इससे चुनाव अधिक निष्पक्ष और परिणाम अधिक प्रतिनिधिक बनते हैं।

अगर हम वर्त्तमान राजनीतिक परिदृश्य की बात करें तो असम, केरल और पुडुचेरी तीनों ही क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार के चुनावी समीकरण देखने को मिल रहे हैं। असम में जहां भाजपा नेतृत्व वाले गठबंधन और कांग्रेस गठबंधन के बीच सीधा मुकाबला है,वहीं केरल में पारंपरिक एल डी एफ (छऊक्ष) और यु डी एफ (वऊक्ष.)के बीच वैचारिक संघर्ष जारी है। पुडुचेरी में त्रिकोणीय मुकाबला चुनाव को और अधिक जटिल और रोचक बना रहा है।

असम में उच्च मतदान यह संकेत देता है कि चुनाव अत्यंत प्रतिस्पर्धी है।राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि सत्तारूढ़ गठबंधन अपने लाभार्थी वर्ग और महिला मतदाताओं का समर्थन बनाए रखने में सफल रहता है,तो उसे बढ़त मिल सकती है ,लेकिन उच्च मतदान अक्सर सत्ता विरोधी भावना का भी संकेत होता है, जिससे चुनाव परिणाम अनिश्चित हो जाता है।

केरल में स्थिति और भी जटिल है, क्योंकि वहां का मतदाता अत्यंत जागरूक और वैचारिक है।यहाँ चुनाव परिणाम बहुत ही सूक्ष्म अंतर से तय होते हैं और यही कारण है कि दोनों प्रमुख गठबंधन पूरी ताकत से मैदान में हैं।पुडुचेरी में रिकॉर्ड मतदान यह संकेत देता है कि मतदाता परिवर्तन चाहता है या स्पष्ट जनादेश देना चाहता है, लेकिन त्रिकोणीय मुकाबले के कारण यहां हंग असेंबली की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता।

मतदान प्रतिशत के भीतर छिपे राजनीतिक संकेतों को यदि समझा जाए कि उच्च मतदान केवल संख्या नहीं,बल्कि एक संदेश है।यह संदेश कभी बदलाव का होता है, कभी समर्थन का और कभी संतुलन का।महिला मतदाताओं की सक्रियता यह दशार्ती है कि कल्याणकारी योजनाएं और सामाजिक सुरक्षा अब राजनीति के केंद्र में हैं।युवा मतदाताओं की भागीदारी यह बताती है कि भविष्य की राजनीति विकास और अवसरों के इर्द-गिर्द घूमेगी।

प्रथम चरण का यह मतदान यह भी स्पष्ट करता है कि भारतीय लोकतंत्र अब एक नए दौर में प्रवेश कर चुका है।यह दौर परंपरागत समीकरणों से आगे बढ़कर विकास,पारदर्शिता और जवाबदेही पर आधारित है। मतदाता अब केवल भावनाओं के आधार पर नहीं,वरन अपने अनुभव और अपेक्षाओं के आधार पर निर्णय लेता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि 2026 के विधानसभा चुनावों का प्रथम चरण केवल एक चुनावी प्रक्रिया नहीं,बल्कि भारत के लोकतांत्रिक आत्मविश्वास का सशक्त प्रमाण है।यह वह क्षण है जब राज्य का हर नागरिक यह महसूस करता है कि उसकी आवाज महत्वपूर्ण है,उसका वोट मूल्यवान है और उसका निर्णय देश के भविष्य को दिशा देने में सक्षम है।

यह केवल मतदान नहीं,बल्कि जनविश्वास का उत्सव है। यह केवल मतदान केआंकड़े नहीं,बल्कि जनभावनाओं की अभिव्यक्ति है। मतदाताओं की यही अभिव्यक्ति भारत के लोकतंत्र को न केवल जीवित रखती है,बल्कि उसे निरंतर सशक्त और समृद्ध भी बनाती है।

(स्वतंत्र पत्रकार व स्तम्भकार)

संपादकीय

घातक किशोर अपराध

बदलते वक्त के साथ समाज में बढ़ते आक्रामक व्यवहार के चलते अपराधों का ग्राफ भी तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन किशोरों की अपराधों में संलिप्तता बढ़ना गंभीर चिंता का विषय है। हाल के दिनों में देश में किशोर अपराधों से जुड़ी अनेक ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने देश को गहरी चिंता में डाला है। जो बाल अपराधों के सामाजिक कारणों पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत पर बल देता है। निस्संदेह, यह विचारणीय प्रश्न है कि छोटे-छोटे विवादों के बीच किशोर हिंसक क्यों हो रहे हैं। जिसकी परिणति अकसर क्रूर हत्या के रूप में सामने आती है। पिछले दिनों दिल्ली के दयालपुर क्षेत्र में सिर्फ चार सौ रुपये के विवाद में एक युवक की निर्मम हत्या डराने वाली है। वहीं किशोरों में कानून का भय न होना गंभीर मसला है। बताया जाता है कि इस युवक की हत्या में तीन नाबालिग संलिप्त थे। इस घटना में तीन किशोर एक युवक पर लगातार चाकू मारते रहे। हिंसक प्रवृत्ति की पराकाष्ठा देखिए कि इनका चौथा साथी बाकायदा मोबाइल पर घटना का वीडियो बनाता रहा। निस्संदेह, यह घटना किसी भी सभ्य समाज में सिहरन पैदा करने वाली है कि किशोर में यह आपराधिक दुस्साहस कहां से आ रहा है। जाहिर बात है कि इन किशोरों में पुलिस-प्रशासन का कोई भय नहीं था, तभी वे सरेआम चाकूबाजी करते रहे। देश की राष्ट्रीय राजधानी जहां के बारे में अकसर कहा जाता है कि पुलिस प्रशासन कानून व्यवस्था बनाने में अग्रणी रहता है, वहां यह घटना सामने आयी। सवाल उठाया जा सकता है कि देश के दूर-दराज के इलाकों में यह स्थिति कितनी गंभीर हो सकती है। ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक है कि किशोरों की आपराधिक घटनाओं में तेजी से बढ़ती भूमिका की असली वजह क्या है? उल्लेखनीय है कि दयालपुर की घटना से पहले भी कई गंभीर अपराधों में किशोरों की संलिप्तता की घटनाएं गाहे-बगाहे सामने आती रही हैं। लेकिन किशोर अपराध से जुड़े कानून उन्हें जल्दी रिहा करा देते हैं। दरअसल, देश में अकसर किशोरों के गंभीर अपराधों में लिप्त होने के चलते उनकी वयस्क होने की उम्र घटाने की मांग होती है। इसकी वजह यह है कि किशोर गंभीर अपराधों में संलिप्तता के बावजूद किशोर अपराध से जुड़े कानूनों के लचीलेपन के चलते जेल से जल्दी रिहा हो जाते हैं। जेल से बाहर आने के बाद फिर दूसरे गंभीर अपराधों में लिप्त हो जाते हैं।

चिंतन-मनन

सर्वव्यापी है आत्मा

केवल वह जो क्षणिक है, छोटा या नर है, उसे ही सुरक्षा की आवश्यकता है; जो स्थायी है, बड़ा या विशाल है, उसे सुरक्षा की जरूरत नहीं। सुरक्षा का अर्थ है समय विशेष को लंबा कर देना; इसीलिए सुरक्षा परिवर्तन में बाधक भी होती है। पूर्ण सुरक्षा की स्थिति में रूपांतरण नहीं हो सकता। सुरक्षा के बिना इच्छित रूपांतरण नहीं हो सकता। एक बीज को पौधे में परिवर्तित होने के लिए सुरक्षा चाहिए; एक पौधे के वृक्ष बनने के लिए सुरक्षा चाहिए। अत्यधिक सुरक्षा रूपांतरण में या तो सहायक हो सकती है या बाधक, इसीलिए रक्षक को यह समझ होनी चाहिए कि किस मात्रा तक उसे रक्षा करनी है। सुरक्षा और रूपांतरण- दोनों काल और समय के अनुसार होते हैं और समय से परे होने के लिए इन नियमों का सम्मान आवश्यक है। सुरक्षा एक विशेष समय और नर चीजों तक ही सीमित है। चिकित्सक कब तक किसी को स्वस्थ रख सकता है या बचा सकता है? सदा के लिए? नहीं। सत्य को किसी सुरक्षा की आवश्यकता नहीं। शांति और खुशी को सुरक्षा की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वे क्षणिक नहीं। तुम्हारे शरीर को सुरक्षा की आवश्यकता है, तुम्हारी आत्मा को नहीं; तुम्हारे मन को सुरक्षा की जरूरत है, स्वरूप को नहीं। आत्मा केवल मन और शरीर का समिश्रण नहीं है। आत्मा न मन है, न शरीर। शरीर के अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य है तुम्हें सचेत करना कि तुम कितने सुंदर हो; और तुमको जागरूक करना कि तुम जिन आदर्शों का सम्मान करते हो, उन सभी को तुम अपने जीवन में ढालकर, अपने चारों ओर एक दिव्य-जगत की सृष्टि करो। जो योगासन तुम करते हो, वह शरीर के लिए और जो ध्यान करते हो, वह मन के लिए है। शांत हो या विचलित; मन, मन ही रहता है। रोगी हो या निरोगी; शरीर, शरीर ही रहता है। आत्मा सर्वव्यापी है। शरीर के किसी अंग को उत्तेजित करने से मजा आता है, सुख का आभास होता है। जब आत्मा का उद्दीपन होता है, प्रेम जागृत होता है। प्रेम अनंत है, परंतु सुख सीमित है। प्रायः व्यक्ति समझते हैं कि सुख ही प्रेम है। सुख और प्रेम के फर्क को केवल भाग्यशाली ही समझ सकता है।

सत्ता पक्ष ने भी माना की नारकोटिक्स विभाग कर रहा किसानों के साथ धोखा - तरुण बाहेती

- STD श्रेणी की अफीम को भी हल्का बताने पर घमासान, कांग्रेस ने नारकोटिक्स कांग्रेस विभाग पर लगाए दोहरी नीति के आरोप
- कांग्रेस के आरोपो को बल मिला, राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर के पत्र का हवाला दिया

नीमच। जिला कांग्रेस अध्यक्ष तरुण बाहेती ने अफीम तौल और जांच प्रणाली को लेकर नारकोटिक्स विभाग की जड़ों पर प्रहार करते हुए इसे भ्रष्टाचार का एक बड़ा नेटवर्क करार दिया है। बाहेती ने कड़े शब्दों में कहा कि कांग्रेस पार्टी जो आरोप महीनों से लगा रही थी, आज उन आरोपों को सत्ता पक्ष के अपने ही राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर के पत्र ने पूरी तरह सच साबित कर दिया है। सांसद गुर्जर द्वारा नारकोटिक्स कमिश्नर को लिखा गया पत्र इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि विभाग की जांच प्रणाली पूरी तरह फेल हो चुकी है और मशीनों की खराबी व पुराने पड़ चुके परीक्षण के तरीकों ने किसानों के पसीने की कमाई को मिट्टी में मिलाने का काम किया है।

जिलाध्यक्ष तरुण बाहेती ने भाजपा के राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर पत्र के हवाला देते हुए कहा की 12 अप्रैल 2026 को जारी परिणामों में भारी विसंगतियां थीं और विभाग खुद स्वीकार कर रहा है कि कई सैंपल की रिपोर्ट संदिग्ध पाई गई है। यह बेहद गंभीर मामला है कि जिस अफीम को तौल केंद्रों पर मशीनों द्वारा तकनीकी रूप से स्टैंडर्ड (STD) श्रेणी में सही पाया गया था, उसी अफीम को बाद में विभाग ने किसानों के मोबाइल पर संदेश भेजकर 'हल्का' और 'मॉर्फीन की कमी' वाला बता दिया। यह सीधे तौर पर किसानों की आंखों में धूल झोंकने जैसा है क्योंकि जब एक ही अफीम के दो अलग-अलग जांच परिणाम सामने आ रहे हैं, तो यह साफ है कि कहीं न कहीं पर्दे के पीछे कोई बड़ा खेल चल रहा है जिससे किसानों के पट्टे और उनकी आर्थिक स्थिति खतरे में पड़ गई है।

बाहेती ने विभाग की दोहरी नीति को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि सरकार भुगतान तो गाढ़ता के आधार पर दे रही है लेकिन पट्टे की पात्रता के लिए मॉर्फीन को आधार बना रही है, जो कि सरासर अन्याय और किसानों का शोषण है। जिले का अन्नदाता आज मानसिक दबाव और भारी असंतोष के दौर से गुजर रहा है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष बाहेती ने मांग की है कि किसानों की आपत्तियों के आधार पर कम मॉर्फीन वाले गांवों के अफीम सैंपलों की दोबारा उच्च तकनीक वाली मशीनों से पारदर्शी तरीके से जांच कराई जाए। इसके साथ ही जिन किसानों के साथ अन्याय हुआ है, उन्हें अपनी बात रखने और अपील करने का उचित अवसर दिया जाना चाहिए ताकि कोई भी किसान व्यवस्था की भेंट न चढ़े। जिला कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस पूर्व में ही किसानों की आवाज को नारकोटिक्स डिप्टी कमिश्नर से मुलाकात के दौरान उठा चुकी है। लेकिन नई पुरानी अभी तक किसानों को कोई ठोस जवाब नारकोटिक्स विभाग से नहीं मिला है जो उचित नहीं है। बाहेती ने अपनी मांग दोहराते हुए कहा कि इस गंभीर मामले में नारकोटिक्स विभाग को स्पष्टीकरण जारी कर इस मामले में किसानों को संतुष्ट करना चाहिए अन्यथा यही माना जाएगा की नारकोटिक्स में किसानों को परेशान करना सबब बन चूका हैं।

किसान बेहाल, आखिर कहाँ 'भूमिगत' हैं सांसद ?

अफीम किसानों पर बढ़ते अत्याचार और नारकोटिक्स विभाग की मनमानी को लेकर जिला कांग्रेस ने क्षेत्रीय सांसद सुधीर गुप्ता की कार्यप्रणाली पर कड़ा प्रहार किया है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष ने सांसद की भूमिका पर गंभीर सवाल खड़े करते हुए पूछा है कि जब आज क्षेत्र का किसान नारकोटिक्स विभाग की तानाशाही से पीड़ित है और अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है, तब सांसद सुधीर गुप्ता आखिर कहाँ छिपे हुए हैं? किसान हित के इतने संवेदनशील और बड़े मुद्दे पर सांसद का 'भूमिगत' हो जाना उनकी संदिग्ध कार्यप्रणाली को उजागर करता है। जब नीति निर्धारण की बैठकों में किसानों का पक्ष रखने की जरूरत होती है, तब सांसद का मौन रहना क्षेत्र के अन्नदाताओं की पीठ में छुरा घोंपने जैसा है। जिला अध्यक्ष ने तीखा हमला बोलते हुए कहा कि आखिर सांसद इस मुद्दे पर बोलने से क्यों बच रहे हैं? उनकी यह रहस्यमयी चुप्पी इशारा करती है कि वे किसानों के बजाय व्यवस्था की खामियों के साथ खड़े हैं। जनप्रतिनिधि का काम जनता की आवाज बनना होता है, लेकिन सुधीर गुप्ता ने चुप्पी साधकर किसानों को उनके हाल पर छोड़ दिया है, जो कि सरासर विश्वासघात है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष बाहेती ने दो टूक शब्दों में चेतावनी दी है कि यदि नारकोटिक्स विभाग की प्रताड़ना नहीं रुकी और प्रक्रिया में पारदर्शिता लाकर किसानों को न्याय नहीं दिया गया, तो कांग्रेस पार्टी चुप नहीं बैठेगी। अब यह लड़ाई सड़कों पर लड़ी जाएगी और कांग्रेस एक ऐसा व्यापक जनआंदोलन खड़ा करेगी जो इस सोई हुई सरकार और 'भूमिगत' सांसद को जगाने का काम करेगा।

एमडी ड्रग्स पकड़ाई : तीन तस्कर गिरफ्तार

नीमच । सिटी पुलिस ने तीन ड्रग तस्करों को पकड़ा है, जिनके पास से 15 लाख रुपए की एमडी ड्रग्स और 6 किलो डोडाचूरा मिला है। यह पकड़-धकड़ नीमच-मनासा रोड पर गाड़ियों की चेकिंग के दौरान हुई। थाना प्रभारी पुष्पा सिंह चौहान की टीम करंट वाले बालाजी मंदिर के पास खड़ी थी। तभी मालखेड़ा की तरफ से एक पल्सर बाइक पर तीन युवक आते दिखे। पुलिस को देखते ही इन लड़कों ने भागने के लिए बाइक मोड़ ली, लेकिन घेराबंदी कर खड़ी पुलिस ने उन्हें वहीं दबोच लिया ।

15 लाख की ड्रग्स और डोडाचूरा मिला - तलाशी लेने पर आरोपियों के पास से 150 ग्राम एमडी ड्रग्स मिली, जिसकी कीमत करीब 15 लाख रुपए बताई जा रही है। साथ ही 20 हजार रुपए का पिसा हुआ डोडाचूरा भी बरामद हुआ। पुलिस ने नशीले सामान के साथ उनकी पल्सर बाइक भी जब्त कर ली है।

नीमच के ही रहने वाले हैं तीनों आरोपी - पकड़े गए युवकों के नाम मोहम्मद अशरफ उर्फ बब्बू (20 साल), अजरखान उर्फ समीर (24 साल) और फरदीन (24 साल) हैं। ये तीनों नीमच शहर के ही रहने वाले हैं। पुलिस ने इनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में केस दर्ज कर लिया है ।

कहां से लाए थे माल, जांच जारी - सब-इंस्पेक्टर असलम पठान ने बताया कि अब इन लड़कों से पूछताछ की जा रही है कि वे यह ड्रग्स कहां से लाए थे और शहर में किसे देने जा रहे थे। पुलिस को उम्मीद है कि इनसे पूछताछ में नशे के कारोबार से जुड़े और भी लोगों के नाम सामने आएंगे। इस काम में साइबर सेल की टीम ने भी मदद की।

कान्हा में तैराकी संघ का महासंगम : 27 अप्रैल की अहम बैठक में नीमच की आवाज बनेंगे अशोक मोदी, खिलाड़ियों के हितों पर होंगे बड़े फैसले

नीमच। प्रदेश में तैराकी खेल को नई दिशा देने के उद्देश्य से मप्र तैराकी संघ की कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक 27 अप्रैल 2026 को कान्हा नेशनल पार्क के पास मोचा (मंडला) स्थित रोजवुड रिजॉर्ट में आयोजित होगी। इस अहम बैठक में नीमच जिला तैराकी संघ के अध्यक्ष व उज्जैन जोन सेक्रेटरी अशोक मोदी जिले का प्रतिनिधित्व करते हुए खिलाड़ियों के मुद्दों को मजबूती से उठाएंगे।

बैठक का आयोजन बालाघाट जिला तैराकी संघ द्वारा किया जा रहा है, जिसमें प्रदेश तैराकी संघ अध्यक्ष व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पीयूष शर्मा और सचिव जय वर्मा की विशेष उपस्थिति रहेगी। प्रदेशभर के सभी जिलों के तैराकी संघों के पदाधिकारी इस बैठक में शामिल होंगे, जिससे इसे तैराकी जगत का बड़ा मंच माना जा रहा है।

तीन दिवसीय आयोजन की शुरुआत 26 अप्रैल को पदाधिकारियों के आगमन के साथ होगी। 27 अप्रैल की सुबह कान्हा के प्राकृतिक सौंदर्य के बीच वन भ्रमण का आयोजन रहेगा, इसके बाद दोपहर में कार्यकारिणी बैठक होगी। इस दौरान खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं, नई प्रतियोगिताओं की रूपरेखा, प्रशिक्षण व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने और संगठन को अधिक प्रभावी बनाने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर मंथन किया जाएगा।

बैठक में प्रदेश में तैराकी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए बड़े निर्णय लिए जाने की संभावना है। आयोजन स्थल तक पहुंचने के लिए जबलपुर, मंडला और बमनी बंजार होते हुए मोचा कान्हा टाइगर रिजर्व के खटिया गेट का मार्ग निर्धारित किया गया है। आयोजकों ने सभी पदाधिकारियों से यात्रा संबंधी जानकारी पूर्व में उपलब्ध कराने का आग्रह किया है।

नीमच जिले के लिए यह बैठक खास महत्व रखती है। अशोक मोदी से उम्मीद है कि वे जिले के तैराकों की समस्याएं, जरूरतें और संभावनाएं प्रभावी तरीके से सामने रखेंगे।

यदि प्रस्तावों को मंजूरी मिलती है, तो आने वाले समय में नीमच के खिलाड़ियों को बेहतर संसाधन, प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं के अधिक अवसर मिल सकते हैं। खेल प्रेमियों की नजर अब इस अहम बैठक पर टिकी है, जहां लिए जाने वाले फैसले जिले की तैराकी प्रतिभाओं को नई दिशा दे सकते हैं।

आशावादी बनिए

हमारे जीवन में प्रयास, पुरुषार्थ, अवरोध एवं संघर्ष का लगातार एक क्रम चलता रहता है। और ऐसे में सफलताएं भी मिलती हैं और विफलताएं भी। लेकिन अगर आप हमेशा आशावादी बने रहेंगे तो नित नई ऊंचाइयां प्राप्त करते रहेंगे।

एडिसन की प्रयोगशाला एक अग्निकांड में पूरी तरह से जल कर ध्वस्त हो गई। उनके जीवन भर की शोध सामग्री और बहुमूल्य उपकरण सब खाक हो गए। आर्थिक क्षति भी बहुत हुई। यदि कोई सामान्य व्यक्ति होता तो उस हादसे से आसानी से उबर नहीं पाता, किंतु एडिसन ने कहा, इसमें हमारी भूलें भी जल कर नष्ट हो गई हैं। हमें ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए, अब हम नए सिरे से जीवन को शुरू कर सकते हैं। इन सब के बीच व्यक्ति की जीवन यात्रा उत्थान की दिशा में बढ़ रही है या पतन की दिशा में, इसमें उस व्यक्ति के दृष्टिकोण की भूमिका सबसे बड़ी होती है।

भाग्य को न कोसें

हम में से अधिकांश लोग ऐसी स्थिति में अपने दु:ख-दर्द एवं दुर्भाग्य के लिए भाग्य को कोसते हैं या फिर दूसरों को दोषी मानते हैं। और नहीं तो भगवान पर ही गुस्सा निकालने लगते हैं। एडिसन ने भगवान को कोसने की बजाय उसका धन्यवाद किया। जैसे ही हमारा जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलने लगता है, तो स्थिति पलटने लगती है। आशा मनुष्य की सबसे बड़ी संपदा है।

आशा उत्साह की जननी

प्रेमचंद ने एक जगह लिखा है, आशा उत्साह की जननी है। उसमें तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालन शक्ति है। यदि व्यक्ति आशा खो बैठता है तो जीवन नैया डूबने लगती है। आशा घोर अभाव और संकट के बीच भी निर्माण के तत्वों की खोज करती है। वह आभासित अभिशाप को भी वरदान में बदल देती है। ठीक इसके उलट, निराशावादी दृष्टिकोण के कारण हम अनुकूल अवसरों में भी प्रतिकूलता देखने लगते हैं। एडिसन आशावादी था, उसने अनुकूल अवसर खोजकर अपने जीवन को नए सिरे से शुरू कर लिया।

विफलता से मिलती है निराशा

इसलिए यदि घटनाएं हमारे अनुरूप नहीं घटतीं और हमें विफलता एवं निराशा का संदेश देती हैं, तो भी हिम्मत हारने एवं हताश होने की आवश्यकता नहीं। चाहे संघर्ष पथ पर हम गिर जाएं, पिट भी जाएं, तो भी यह नहीं भूलना चाहिए कि कोई भी असफलता अंतिम नहीं होती। यदि लक्ष्य के प्रति मन में लगन हो, तो विफलता भी गिर कर फिर से उठकर खड़े होने और दुगुने उत्साह के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

सफलताओं से सीखें

आशावादी व्यक्ति व्यावहारिक रुख अपनाते हुए अपने जीवन की छोटी - छोटी सफलताओं से क्रमश: आगे बढ़ता है। अपनी कार्यकुशलता और इच्छाशक्ति को क्रमश: विकसित करता जाता है। यह पद्धति रचनात्मकता का स्रोत बनकर उसे लगातार आगे बढ़ाती रहती है। निराशावादी व्यक्ति जहां एक दरवाजा बंद देखते ही अपना प्रयास छोड़ देता है, वहीं आशावादी व्यक्ति दूसरे खुले दरवाजों की तलाश में जुट जाता है। निराशावादी जहां सतत् हारता है, वहीं आशावादी अपनी तात्कालिक विफलताओं के बावजूद एक विजेता बन कर उभरता है। वास्तव में जब तक हम अपने जीवन के अर्थ एवं सुख की खोज के लिए बाहरी वस्तुओं, व्यक्तियों एवं परिस्थितियों पर निर्भर रहते हैं, तब तक निराशा का भाव भी बार-बार आता है। और जब दृष्टि अपने अंदर के मूल स्रोत की ओर मुड़ने लगती है, तो निराशा का कुहासा भी घटने लगता है।

हिम्मत न हारें

यदि हम छोटी-छोटी असफलताओं और रुकावटों से हिम्मत हार बैठते हैं और नकारात्मक भावों को जीवन में हावी होने देते हैं, तो यात्रा का हर कदम दूभर एवं कष्टप्रद बन जाता है। जीवन एक दु:खद घटना एवं दुर्भाग्यपूर्ण मजाक लगने लगता है। हमारी ऊर्जा कुंठित होने लगती है।

परमात्मा का वरदान

यहीं पर हमें परमात्मा की कृपा एवं वरदान की भाव भरी अनुभूति होती है। अपने ईमानदार प्रयास के साथ प्रभु प्रेम एवं उसके अचूक न्याय विधान के प्रति आस्था को धारण कर हम अनायास ही आस्तिकता एवं धार्मिकता के पथ पर बढ़ जाते हैं। वही हमें जीवन की सार्थकता के बोध की ओर ले चलती है।

ज्यों ही कोई विज्ञान पूर्ण एकता तक पहुंच जाएगा, त्यों ही उसकी प्रगति रुक जाएगी क्योंकि तब वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। उदाहरणार्थ रसायनशास्त्र यदि एक बार उस मूल तत्त्व का पता लगा ले जिससे और सब द्रव्य बन सकते हैं तो फिर वह और आगे नहीं बढ़ेगा।

प्रकृति का दास नहीं मनुष्य

भौतिकी जब उस एक मूल शक्ति का पता लेगी, अन्य शक्तियां जिसकी अभिव्यक्ति हैं तब वह वहीं रुक जाएगी। वैसे ही धर्मशास्त्र भी उस समय पूर्णता को प्राप्त कर लेगा जब वह उसको खोज लेगा जो इस मृत्युलोक में एकमात्र जीवन है, जो इस परिवर्तनशील जगत का शाश्वत आधार है, जो एकमात्र परमात्मा है, अन्य सब आत्माएं जिसकी प्रतीयमान अभिव्यक्तियां हैं। इस प्रकार अनेकता और द्वैत में होते हुए इस परम अद्वैत की प्राप्ति होती है। धर्म इससे आगे नहीं जा सकता। यही समस्त विज्ञानों का चरम लक्ष्य है।

धर्म का प्रारंभ

धर्म का प्रारम्भ कैसे हुआ और वह क्रमशः विकास द्वारा आध्यात्मिक अद्वैतवाद की इस सीमा तक कैसे पहुंचा? क्या इसके बाद विचार के विकास पर विराम चिह्न लगा देना सम्भव है? मनुष्य मननशील प्राणी है। उसका मस्तिष्क अन्य सभी प्राणियों की अपेक्षा अधिक उन्नत है और यह मस्तिष्क ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। जबकि दूसरे प्राणियों ने आत्मरक्षा की सहज प्रवृत्ति से अपने आप को प्रकृति के अनुरूप ढाला है और निरन्तर ढालता जा रहा है। मनुष्य प्रकृति का दास नहीं विजेता है। उसने अपनी विचार-शक्ति द्वारा आग, पानी, बिजली का प्रयोग करके, शस्त्र-यंत्र का आविष्कार करके और प्रकृति के नियमों की खोज लगाकर अपनी इस विजय को सम्भव बनाया। प्रकृति को बदलने में वह स्वयं भी बदला। अपने इस संघर्ष में ही वह पशु से मनुष्य, हैवान से इंसान बना।

दैविक शक्ति का हाथ

मतलब है कि उसके निर्माण में किसी दैविक शक्ति का हाथ नहीं, बल्कि अपने इस संघर्ष के दौरान देव, दानव तथा ईश्वर आदि दैवी शक्तियों का निर्माण स्वयं उसने किया। सभी विचार भौतिक परिस्थितियों से उत्पन्न हुए, मनुष्य ने उन्हें व्यवहार की कसौटी पर परखा। उनके असार तत्त्व को त्याग कर सारतत्त्व को भौतिक शक्ति में परिणत किया तथा सिद्धान्तों का रूप दिया।

प्रेम का कमल भक्ति

सपनों का ताना-बाना क्षण भर को रुकता नहीं। उसी सपने के जाल का नाम माया है। उसी सपने के जाल में उलझे तुम परेशान और पीड़ित हो। जो नहीं है उसने तुम्हें अटकाया है। जो नहीं है, उसने तुम्हें भरमाया है। जो नहीं है उसने तुम्हारी आंखें बंद कर दी हैं और जो है उसे देखना मुश्किल हो गया है।

मन के साथ जो चला, वह कभी भगवान तक न पहुंच सकेगा। भगवान यानी जो है, भक्ति यानी जो है, उसे देखने की कला। लेकिन जो है, वह हमें दिखायी क्यों नहीं पड़ता? जो है वह तो हमें सहज दिखायी पड़ना चाहिए। जो है उसे खोजने की जरूरत ही क्यों हो? जो है उसे हम भूले ही क्यों, उसे हम भूले ही कैसे? जो है उसे हमने खोया कैसे? जो है उसे खोया कैसे जा सकता है?

इसलिए पहली बात समझ लेनी जरूरी है, मन का नियम। मन उसी को जानता है जो नहीं है। तुम्हारे पास अगर दस हजार रुपए हैं तो उन दस हजार रुपयों को मन भूल जाता है। मन उन दस लाख रुपयों का चिंतन करता है जो होने चाहिए, पर हैं नहीं। मन अभाव का चिंतन करता है। जो पत्नी उपलब्ध है, मन उसे भूल जाता है। जो स्त्री उपलब्ध नहीं है, मन उसकी कल्पनाएं करता है, योजनाएं बनाता है। जो मिला है, मन उसे देखता ही नहीं। उसी पर नजर रखता है, जो मिला नहीं है। हाथ की असलियत मन को नहीं भाती, स्वप्न के आभास भाते हैं। मन स्वप्न के भोजन पर जीता है। मन जीता ही स्वप्न के सहारे है।

भीतर सपनों का जाल

जब भी आंख बंद करोगे, भीतर सपनों का जाल पाओगे। आंख खोले काम में भी लगे हो, तब भी भीतर उनका सिलसिला जारी रहता है। तब भी पर्त-दर-पर्त सपने घने होते रहते हैं। तुम देखो या न देखो, लेकिन मन सपने बुनता रहता है। मन का

मन में श्रद्धा नहीं

रात तुमने कितनी बार सपने देखे हैं और हर बार जागकर पाया, झूठे थे! लेकिन फिर जब रात आज देखोगे स्वप्न तो देखते समय सच मानोगे। झूठ को सच मानने की तुम्हारी कितनी प्रगाढ़ धारणा है! कितनी बार जागकर भी, कितनी बार देखकर भी कि सपने सुबह झूठ सिद्ध हो जाते हैं, फिर भी जब तुम रात स्वप्न देखोगे तो सच मालूम होगा। लोग कहते हैं, हमारे मन में श्रद्धा नहीं है। हम बड़े संवेदनशील हैं।

निस्तार कैसे होगा

हमारा निस्तार कैसे होगा? मैं कहता हूं, तुम सपनों तक पर श्रद्धा करते हो, सत्य की तो बात ही छोड़ो। तुम सपनों तक पर भरोसा करते हो, उन पर तक तुम्हें अभी सन्देह नहीं आया, तो तुम और किस पर सन्देह करोगे? जो नहीं है, उस पर भी सन्देह नहीं हो पाता, तो जो है उस पर तुम कैसे सन्देह करोगे? जिसने सपने तोड़े, उसके भीतर श्रद्धा का जन्म हुआ। जिसने सपने तोड़े, उसने तब सत्य को जानने का मार्ग साफ कर लिया।

बुद्धि नहीं हृदय की सुनिए

तुम्हारा हृदय ही कहेगा। हृदय हमेशा कह देता है, मगर तुम सुनते नहीं हो हृदय की। तुम कहते हो, कैसे गुरु को पहचानें? क्या कसौटी है? बुद्धि कसौटी मांगती है, हृदय तत्क्षण कह देता है, हृदय की सुनो, बुद्धि को एक तरफ रख दो।

हृदय से कभी भूल नहीं हुई है। हृदय ऐसे ही है, जैसे तुमने दिशासूचक-यंत्र, जो सदा बताता रहता है पूरब की ओर, सूरज उगने की ओर। हृदय सदा परमात्मा की तरफ इशारा करता है, मगर तुम हृदय नहीं बुद्धि की सुनते हो और बुद्धि की सुनने के कारण अक्सर भ्रांति में पड़ते हो। सच यह है कि जब तक बुद्धि की सुनते रहोगे, तब तक गुरु नहीं मिलेगा। जो मिलेंगे वे गुरु के धोखे होंगे। गुरु के धोखे बुद्धि को राजी कर लेंगे, क्योंकि गुरु के धोखे का मतलब होता है-जो तुम्हें राजी करने को ही बैठा है। तुम जैसा चाहते हो, वैसा बनकर बैठा है। सद्गुरु कभी भी तुम्हारी अभिलाषाओं, आकांक्षाओं, अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं होता, हो ही नहीं सकता। नहीं तो जीसस को लोग सूली चढ़ाते? बुद्ध को पत्थर मारते? महावीर को गांव से खदेड़ कर निकालते? सुकरात को जहर पिलाते? यह मत सोचना कि वे सब लोग पागल थे। वे तुम्हारे ही जैसे लोग थे, तुम ही थे-जिन्होंने जीसस को सूली दी, सुकरात को जहर पिलाया, बुद्ध को पत्थर मारे, महावीर के कानों में सींखचे ठोक दिये। वे तुम से जरा भी भिन्न न थे। ऐसा नहीं है कि गुरुओं की पूजा उस दिन नहीं हो रही थी। जब बुद्ध को लोग पत्थर मार रहे थे, तब भी पंडित, पुजारी, पोंगापंथी पूजे जा रहे थे। जब जीसस को लोग सूली पर चढ़ा रहे थे, तब भी धर्मगुरु का सम्मान किया जा रहा था।

तुम्हारी बुद्धि जिससे राजी हो जाती है, वह अक्सर धोखा होता है। उसके पीछे कारण है, क्योंकि वह धोखे की पूरी तैयारी करता है। वह गुरु नहीं, गहरे अर्थ में सिर्फ राजनेता है। राजनेता की कला का सार यही है कि लोग जहां जाना चाहते हैं, वहां जल्दी से उचक कर उनके आगे हो जाता है।

लोग पूरब जा रहे हैं तो वह कहता है पूरब जाना है। लोग पश्चिम जाने लगें तो कहता है, मैं तो सदा कह रहा था कि पश्चिम जाना है और लोगों को समझ नहीं आ पाता कि वह हमारी नजरें परख रहा है, हमारे भाव परख रहा है, हवा का रुख परख रहा है। सद्गुरु तुम्हारे हिसाब से नहीं चल सकता,परमात्मा के हिसाब से चलता है। उसके साथ तो जिसे राजी होना हो, उसे ही राजी होना पड़ता है। वह तुम से राजी नहीं होता। समझ लेना, जो तुमसे राजी है, वह तुम्हें बदल नहीं पाएगा।

कई बार ऐसा होता है कि ध्यान में जाने और मंत्रों के उच्चारण के बाद भी मन अन्य बातों की ओर भागता है।

मानसिक ऊर्जा का स्रोत

जैसे किराने की दुकान खुली या नहीं? या आज खाना कौन बनाएगा? पर जब आप खुद के साथ समय बिताने की आदत डाल लेंगे तो मंत्र आपकी मानसिक शक्ति और ऊर्जा को बढ़ाएंगे और उच्च संस्कारों का निर्माण होगा। आपको अपने मन को इसके अनुकूल बैठाना होगा। अनचाही चीजों के बारे में सोचते रहना मन का स्वभाव होता है। जब भी हम चिंता करते हैं तो हमारा शरीर काफी सारी ऊर्जा खो बैठता है।

ऊर्जा मत खोओ

दो गलत तरह के मंत्रों का उपयोग करने से हम अपनी यह ऊर्जा खो बैठते हैं। पहला है आर्द, जिसका मतलब होता है बार-बार दु:खों को याद करते रहना। दूसरा है रौद्र, जिसका मतलब होता है गुस्से को आने देना। इनका परिणाम यह होता है कि शरीर बीमारियों का शिकार होने लगता है। अपने मन को आर्द और रौद्र से छुटकारा दिलाने के लिए अपनी आध्यात्मिक क्रिया जारी रखें, मंत्रों का उच्चारण करें और ध्यान में जाएं। महर्षि पातंजलि ने योगसूत्रों में कहा है- यदि स्तान संशय अतिरति प्रमाद आलस्य। बीमारी, उत्साह की कमी, शंका, चिंता आदि रुकावटों को दूर करने के लिए एक तत्व अभ्यास का प्रयोग करें। किसी भी एक मंत्र का उच्चारण करें, उस एक ध्वनि का, एक शब्दांश का लंबे समय तक अभ्यास करें।

मन का विचार

तो जब मन में विचार और मंत्र दोनों चल रहे हों, आपका मन और चैतन्य मंत्रों से भरा होना चाहिए। तब मन चिंताओं से मुक्त हो जाता है क्योंकि एक मंत्र में शक्ति के साथ-साथ एक खास स्पंदन भी होता है। जब उसका उच्चारण किया जाता है, तो वह ऊर्जा में बदल जाता है और आपके चैतन्य को भर देता है। जैसे-जैसे चैतन्य में यह ऊर्जा बढ़ती है, हम स्वयं के और करीब आ जाते हैं और हमारी हर चीज में- जैसे कि हमारे घर में, मन में शरीर और वातावरण में यह ऊर्जा और निश्चयात्मकता फैलती चली जाती है।

Email: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 70664886

जनगणना 2026-27: स्व-गणना से तेज और सरल होगा सर्वे, कलेक्टर कार्यालयों में हेल्प डेस्क शुरू

नीमच । भारत की आगामी जनगणना 2026-27 को अधिक सुव्यवस्थित और समयबद्ध बनाने के लिए सरकार ने इस बार ऑनलाइन "स्व-गणना" (Self Enumeration) की सुविधा शुरू की है। इसके तहत नागरिक 16 अप्रैल से 30 अप्रैल के बीच स्वयं अपनी व्यक्तिगत जानकारी ऑनलाइन भर सकते हैं, जिससे बाद में घर-घर जाकर होने वाली गणना प्रक्रिया बेहद तेज और आसान हो जाएगी।

अधिकारियों के अनुसार, स्व-गणना करने वाले नागरिकों के यहां जब प्रगणक पहुंचेंगे, तो पूरी प्रक्रिया महज कुछ सेकंड में पूरी हो सकेगी। इससे न केवल समय की बचत होगी बल्कि जनगणना कार्य में सटीकता भी बढ़ेगी। प्रशासन ने यह भी स्पष्ट किया है कि स्व-गणना के दौरान दी गई सभी जानकारियां पूरी तरह गोपनीय रखी जाएंगी और उनका उपयोग केवल जनगणना के उद्देश्यों के लिए ही किया जाएगा। नागरिक बिना किसी चिंता के अपनी

जानकारी दर्ज कर सकते हैं। इसी कड़ी में मध्यप्रदेश के नीमच के कलेक्टर कार्यालय में हेल्प डेस्क स्थापित किए गया हैं। यहां आम नागरिकों को स्व-गणना प्रक्रिया की जानकारी देने के साथ-साथ उन्हें ऑनलाइन जानकारी भरने में सहयोग भी दिया जा रहा है। हेल्प डेस्क पर नियुक्त ऑपरेटर इच्छुक लोगों की सहायता कर रहे हैं ताकि अधिक से अधिक लोग इस सुविधा का लाभ उठा सकें।

नीमच अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी पराग जैन ने बताया कि भारत की जनगणना 2026-27 के लिए इसमें पहले चरण में मकानों की जो जनगणना की जा रही है, उसमें सबसे पहले कोई भी व्यक्ति अपना 16 अप्रैल से 30 अप्रैल तक में अपनी व्यक्तिगत जानकारी भर सकता है और इसके माध्यम से जब प्रगणक उनके घर पर आएंगे तो बहुत समय नहीं लगेगा, केवल आधे मिनट में उनका काम हो जाएगा।

स्व-गणना में व्यक्ति अपनी जो जानकारी भर रहे हैं वह पूरी तरह से गोपनीय रखी जाएगी और किसी भी प्रकार से इसका उपयोग कहीं पर भी नहीं किया जाएगा। इस प्रकार स्व-गणना में व्यक्ति अपनी पूरी जानकारी भरकर सबमिट कर सकते हैं जिससे कि जनगणना समय पर हो सके और अच्छे से हो सके।

यह काउंटर आज जैसे जो लोग आ रहे थे उनके लिए सूचना के लिए था और इसमें साथ में जो भी व्यक्ति अपनी स्व-गणना करना चाहते हैं उनको यहाँ पर फैसिलिटेट किया जा रहा है, इसमें ऑपरेटर हमने लगाए हैं और वे अपनी स्व-गणना खुद दर्ज करा सकते हैं, यहाँ सहयोग के लिए उनको बिठाया गया है।

नीमच के रहने वाले सुरेश चंद्र सोडानी ने बताया कि 2027 की जनगणना के लिए स्व गणना यहां हो रही है, मैंने इसका लाभ उठाया है, भैया यहां बैठे हुए है इन्होंने मोबाइल से ही मेरी स्व गणना कर दी है। सबको इसका लाभ उठाना चाहिए, यहां आसानी से हो रही है किसी चीज की कोई दिक्कत नही हो रही है।

अब बैंक सुरक्षा में कोई ढिलाई नहीं : एसपी का अल्टीमेटम

नीमच। जिले में बढ़ते साइबर फ्रॉड और बैंक सुरक्षा को लेकर पुलिस अब पूरी तरह सख्त मोड में आ गई है। एसपी अंकित जायसवाल ने सोमवार को आयोजित बैठक में 50 से अधिक बैंक प्रबंधकों को स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा कि सुरक्षा व्यवस्था में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

बैठक में सभी बैंकों को निर्देशित किया गया कि सीसीटीवी कैमरे, पैनिक अलार्म और सायरन हर समय सक्रिय स्थिति में रहें। बैंक परिसर के अंदर और बाहर हर कोने की निगरानी सुनिश्चित करने के लिए हाई-क्वालिटी सर्विलांस सिस्टम अनिवार्य किया गया है।

एसपी ने बैंक और पुलिस के बीच बेहतर समन्वय के लिए प्रत्येक थाना स्तर पर व्हाट्सएप ग्रुप बनाने के निर्देश दिए, ताकि किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत साझा की जा सके। बैंक गार्डों को भी सतर्क रहने, संदिग्ध व्यक्तियों पर नजर रखने और तत्काल पुलिस को सूचना देने के लिए कहा गया।

रात के समय सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए पुलिस को प्रत्येक बैंक के आसपास कम से कम दो बार गश्त करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, म्यूल अकाउंट और ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामलों को लेकर विशेष सतर्कता बरतने को कहा गया है।

सभी बैंकों को अपने सुरक्षा गार्डों का सत्यापन अनिवार्य रूप से करवाने के निर्देश भी दिए गए हैं। एसपी ने दो टूक कहा— "सुरक्षा में लापरवाही मिली तो सीधे कार्रवाई होगी।"

सुप्रीम कोर्ट की दो टूक : राजमार्गों से 60 दिन में हटें अवैध ढाबे और दुकानें, अधिकारी होंगे जवाबदेह

नई दिल्ली। देश की सड़कों को 'मौत के गलियारे' में तब्दील होने से रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक हस्तक्षेप किया है। न्यायमूर्ति जे.के. माहेश्वरी और न्यायमूर्ति अतुल एस. चंदुरकर की पीठ ने स्पष्ट शब्दों में यह व्यवस्था दी है कि सुरक्षित यात्रा का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार का ही एक अभिन्न अंग है। कोर्ट ने नवंबर 2025 में राजस्थान और तेलंगाना में हुए दर्दनाक हादसों का स्वतः संज्ञान लेते हुए इसे सिस्टम की घोर लापरवाही करार दिया और स्पष्ट किया कि कोई भी एक्सप्रेसवे प्रशासनिक सुस्ती के कारण नागरिकों के लिए खतरा नहीं बन सकता। इस व्यवस्था को लागू करने के लिए शीर्ष अदालत ने राजमार्गों पर भारी और वाणिज्यिक वाहनों की पार्किंग पर पूरी तरह से रोक लगा दी है, जिससे अब ये वाहन केवल निर्धारित पार्किंग स्थलों पर ही खड़े हो सकेंगे। साथ ही प्रशासन को यह कड़ा निर्देश दिया गया है कि राजमार्गों के अधिकार क्षेत्र में आने वाले सभी अवैध ढाबों और वाणिज्यिक निर्माणों को 60 दिनों के भीतर पूरी तरह साफ किया जाए। भविष्य में सुरक्षा मानकों के उल्लंघन को रोकने के लिए कोर्ट ने बिना पूर्व अनुमति के किसी भी नए लाइसेंस के जारी होने या पुराने के नवीनीकरण पर भी रोक लगा दी है।

सुरक्षा के इस नए ढांचे में जवाबदेही तय करने के लिए जिला स्तर पर 'हाईवे सुरक्षा कार्य बल' का गठन किया जाएगा जिसकी सीधी जिम्मेदारी जिलाधिकारी और पुलिस प्रमुखों की होगी। दुर्घटना की स्थिति में त्वरित सहायता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक 75 किलोमीटर पर लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस और रिकवरी क्रेन की तैनाती को अनिवार्य कर दिया गया है। इसके अलावा आधुनिक तकनीक का सहारा लेते हुए रियल-टाइम निगरानी और ई-चालान व्यवस्था को प्रभावी बनाने पर जोर दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने संबंधित एजेंसियों को 45 दिनों के भीतर सभी 'ब्लैकस्पॉट्स' की पहचान कर उन्हें सार्वजनिक करने और अगले चार महीनों में वहां चेतावनी संकेतों के साथ उच्च तीव्रता वाली लाइटिंग लगाने की समयसीमा निर्धारित की है।

सभी संबंधित विभागों को इस आदेश के अनुपालन की रिपोर्ट 75 दिनों के भीतर पेश करनी होगी। यह फैसला न केवल सड़क सुरक्षा की दिशा में एक बड़ी मानवीय पहल है, बल्कि उन लापरवाह अधिकारियों के लिए भी एक कड़ी चेतावनी है जिनकी अनदेखी के कारण मासूम लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ती है।

सत्येंद्र कुमार सक्सेना बने मध्यप्रदेश फार्मासिस्ट एसोसिएशन नीमच के जिला अध्यक्ष

नीमच । फार्मासिस्ट के अधिकारों के लिए कार्यरत प्रदेश और राष्ट्र स्तर पर सरोकार के साथ वर्षों से फार्मासिस्ट हितों के लिए फार्मा क्षेत्र में दूरदृष्टी और ईमानदार उद्देश्यों के साथ कार्य करने वाली संस्था मध्य प्रदेश फार्मासिस्ट एसोसिएशन के नीमच जिला अध्यक्ष पद पर फार्मासिस्ट सत्येंद्र कुमार सक्सेना को एमपीपीए प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश त्रिपाठी, सचिव दीपक मिश्रा, नीमच जिला प्रभारी एमपीपीए मंदसौर जिला अध्यक्ष मिथुन वाप्ता की अनुशंसा पर निर्विरोध नियुक्त किया है । इस नियुक्ति पर फार्मासिट रोहित शर्मा, विहान पटवा, अभी नेमा, शैलेंद्र पाटीदार, मोहसिन मंसूरी, प्रतीक व्यास, आयुष बोडाना, आयुष नागर आदि ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी । उपरोक्त जानकारी मीडिया प्रभारी पंकज श्रीवास्तव ने दी ।

44 डिग्री के पार हुआ पारा, लू की चेतावनी

भोपाल । मध्य प्रदेश में भीषण गर्मी ने कई इलाकों में लोगों पर कहर बरपाना शुरु कर दिया है। अधिकतर इलाकों में तेज हवा के साथ बादल छाने के बावजूद तापमान पर कुछ खास कमी नजर नहीं आ रही है। खास बात ये है कि, इस सीजन में पहली बार प्रदेश का अधिकतम तापमान 44 डिग्री के पार पहुंच गया है। जबकि, राजधानी भोपाल में अधिकतम तापमान 41.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है जो सामान्य से तीन डिग्री अधिक है। बीते 24 घंटों की बात करें तो प्रदेश में रविवार को भीषण गर्मी का दौर देखने को मिला।

26 अप्रैल को नए नियमों के साथ होगी MPPSC एग्जाम

भोपाल । मध्यप्रदेश पब्लिक सर्विस कमीशन यानी MPPSC की प्रीलिम्स परीक्षा में इस बार काफी बदलाव देखने को मिलेंगे। पहली बार अभ्यर्थियों को एग्जाम शुरू होने के 90 मिनट पहले एग्जाम सेंटर पर पहुंचना होगा। वहीं पहली बार नेगेटिव मार्किंग भी होगी। आयोग के अनुसार, यह बदलाव परीक्षा में पारदर्शिता और सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से किया गया है।

अभ्यर्थियों को थ्री लेयर सिक्योरिटी से गुजरना होगा – MPPSC की नई गाइडलाइन के अनुसार केंद्रों पर अभ्यर्थियों को थ्री लेयर सिक्योरिटी से गुजरना होगा। इसमें हर उम्मीदवार को 5 से 7 मिनट का समय लगेगा, इसी कारण एग्जाम सेंटर आने का समय 90 मिनट पहले किया गया है। पहले यह समय 45 मिनट पहले था। वहीं परीक्षा शुरू होने से 30 मिनट पहले ही केंद्रों के प्रवेश द्वार बंद कर दिए जाएंगे।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।